पासवर्ड

कमल कुमार

पासवर्ड

कमल कुमार

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवंबर, 2024

© कमल कुमार

युवा पीढ़ी के लिए

हाय! चलो आज तुम्हारा नया नामकरण कर देती हूं, आशीष। तुम्हारे नाम से मिलता-जुलता ही है। असली नाम जाने ही दो। यों भी तुम्हें कितने नाम दे रखे हैं मैंने। कांस्टीपेटिड, सूखा कुआं, सूखी बावड़ी, ब्लॉटिंग पेपर, सेनिटरी पैड।

यह सब नहीं, असल में तुम मेरे अंतरिक्षयान हो। सबसे लंबे समय तक स्पेस में रहनेवाला अंतरिक्षयान। कितने साल हो गए? जाने दो, इस अंतरिक्षयान में मैं और मेरे इतने वर्षों के अनुभव। ग्रेविटेशनल पुल के बिना भारहीन होकर सब कुछ करते रहने की आदत पड़ गई है अब मुझे। भारतीय मूल की सुनीता ने रिकॉर्ड बनाया। वह अपने विशेष अनुभव, अपने प्रयोग सब बताएगी, लेकिन कितनी मुश्किल हुई थी उसके अंतरिक्षयान को जमीन पर लाने में। मौसम की खराबी। यान को एक खास तरह की कंबलनुमा परतों में, हीट कवर में होना चाहिए था। पृथ्वी के घर्षण को सहने के लिए। नहीं तो घर्षण से उठनेवाली आग से यान जलकर भस्म हो सकता था। कल्पना के साथ यही हुआ था। मेरा यह अंतरिक्षयान, जिसमें मैं और तुम हैं, इसको आखिर तो उतरना ही धरती के यथार्थ पर है। पृथ्वी की कक्षा में आ रहा है। बस वही डर, पृथ्वी के घर्षण से जलकर भस्म न हो जाए। इसीलिए इसे उस 'विशेष कवर' में लपेटकर ही उतारा जाना है। तभी तो तुम्हारा नाम नहीं लिखा। अटपटा लग रहा था। इसलिए आज सोचा नाम दे ही दूं। स्पेस में तुम्हारे साथ अंतरिक्षयान के मेरे अनुभव, किसी आनेवाले वैज्ञानिक प्रयोग के लिए नहीं होंगे। ये अनुभव मेरे, सिर्फ मेरे होंगे और मेरे ही साथ

समाप्त हो जाएंगे। विचित्र दुनिया है यह, जिसमें तुम्हारे साथ हूं, नहीं भी हूं। हम साथ कम होते हैं, होने की कामना ज्यादा करते हैं। फिर साथ होते हैं तो भी झगड़ते ज्यादा हैं। हम दो अलग इकाइयां हैं। हमारी आपस में कोई कंपेटेबिलिटी नहीं है, न प्रोफेशनल, न रचनात्मक, न उम्र में और न हमारे विचार-व्यवहार में। फिर भी, हम मिले, मिलते भी थे। रहा भी नहीं जाता था। ऐसा क्यों हुआ? नहीं जानती।

एक बात सोचती हूं आज। दोहराती भी हूं। हमें कुछ समय लिव इन रिलेशनशिप में रह लेना चाहिए था। सालों न सही, महीनों के लिए ही सही। कुछ थोड़ा-सा समय हम साथ रहते तो अच्छा होता। जल्दी ही लड़लड़ाकर, झगड़कर एक-दूसरे से नाराज होकर अलग हो जाते, लेकिन उस साथ रहने से इस रिश्ते को पूर्णता तो मिलती। इतनी भटकन तो न होती। मेरी रूह तो न भटकती रहती। क्यों भटकती है मेरी आत्मा? पता नहीं। तर्क से सोचती हूं तो बहुत ठीक नहीं लगता, गुस्सा आता है अपने पर, तुम पर! लेकिन ज्यादा समय रहती नहीं यह स्थिति। सब पिघल जाता है तुम्हारे प्यार की तपिश में।

वैसे तुम मेरे प्यार के काबिल भी नहीं हो। इतना प्यार तुम्हें कौन करेगा? कितना समय लगा मुझे संभलने में, पर सच में कितना संभल पाई हूं। संभल पाई हूं क्या! जाने दो, मेरे सोचने से कुछ नहीं होगा।

याद है शुरू-शुरू में हम कितने फोन करते थे। मैं चाहती थी तुम्हारे साथ बनी

रहूं, लेकिन तुम दोहरी जिम्मेदारियों में थे। एक तरफ तुम्हारा नियमित अस्पताल था, दूसरी और अपना क्लीनिक बना रहे थे। तुम्हारे पास जरा भी समय नहीं था। फिर भी कहते, मैं आता हूं। इंतजार करती, तुम्हें देर हो जाती। तो फिर लड़ाई-झगड़ा।

उस दिन कॉलेज में तुम्हारा इंतजार किया। फिर तुमने कहा-तुम्हें अभी आधा-पौना घंटा और लगेगा। ऑपरेशन तुरंत करना होगा। मैंने सुझाया था, मैं आ जाती हूं, वहीं से साथ चलेंगे। इतना समय मुझे पहुंचने में भी लगेगा ही। मैं पहुंच गई थी। कैफे में बैठ गई थी। भूख के मारे बेहाल भी थी। आखिर, कॉफी मंगवाई थी। मेरे पास किताब थी, पढ़ती रही थी। घड़ी देखी तो कहे समय से एक घंटा ऊपर हो चुका था। सोचा चली जाती हूं। तभी तुम आए थे। गुस्से से बेकाबू मैंने अपनी चीजें समेटी थीं। किताब बंद की थी। पर्स उठाया था। उठने लगी तो तुमने हाथ पकड़कर बैठा दिया था। अब आप बैठो, मत जाओ।

यह कोई तरीका है। व्हाट डु यू थिंक ऑफ मी। आई कैन वेट इटरनली फॉर यूं। मेरे समय की कोई कीमत नहीं है। कितनी बार कहा तुम्हें आई हेट वेटिंग!

तुम न तो अपने को कभी जस्टीफाई करते और न कभी कोई स्पष्टीकरण देते। चुप्पा से मुंह फुलाकर बैठ जाते या एक वाक्य में कहते, इमरजेंसी थी।

तुम्हें हमेशा इमरजेंसी ही होती है। हटो, मुझे जाने दो। तुमने जाने दिया था तो और भी गुस्सा आया था। तुम भी उठकर मेरे साथ बाहर आए थे। मैं अपनी गाड़ी की